समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 18 August 2026

मराठा आरक्षण विवाद : मनोज जरांगे ने पंकजा-मुंडे पर साधा निशाना, चेताया राजनीतिक खतरा

Publisher

Published on 04 Oct 2025

महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण को लेकर एक बार फिर राजनीतिक और सामाजिक विवाद गरमाया हुआ है। मराठा आरक्षण के प्रमुख कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने महाराष्ट्र सरकार की मंत्री पंकजा मुंडे और उनके रिश्तेदार धनंजय मुंडे को चेतावनी दी है कि अगर उन्होंने मराठा समुदाय के हितों के खिलाफ कोई कदम उठाया, तो उनके राजनीतिक करियर पर गंभीर असर पड़ेगा।

इस विवाद की शुरुआत तब हुई जब पंकजा मुंडे ने सार्वजनिक रूप से बयान दिया था कि मराठा समुदाय को ओबीसी की थाली से आरक्षण नहीं मिलना चाहिए। उनके इस बयान ने मराठा समुदाय में असंतोष और नाराजगी पैदा कर दी। मनोज जरांगे ने इसे गंभीर चुनौती मानते हुए कहा कि इस तरह की टिप्पणियों से न केवल समाज में गलत संदेश जाता है, बल्कि यह उनके राजनीतिक भविष्य के लिए भी खतरा बन सकता है।

मनोज जरांगे ने स्पष्ट किया कि मराठा समुदाय के मुद्दे अब राजनीतिक दलों के लिए केवल चुनावी बयानबाजी का विषय नहीं रह गए हैं। यह समुदाय अपने अधिकारों और आरक्षण की मांग के प्रति बेहद संवेदनशील है। उन्होंने कहा कि मराठा युवाओं और कार्यकर्ताओं का मनोबल इस बात पर निर्भर करता है कि उनके नेता उनकी आवाज़ को सुने और उनके हितों की रक्षा करें।

मंत्री पंकजा मुंडे और उनके भाई धनंजय मुंडे की प्रतिक्रिया ने भी विवाद को और बढ़ा दिया। पंकजा ने अपने बयान का बचाव करते हुए कहा कि उनका तात्पर्य किसी समुदाय को अपमानित करना नहीं था, लेकिन मराठा कार्यकर्ताओं ने इसे सीधे चुनौती के रूप में लिया। मनोज जरांगे ने इस अवसर पर कहा कि अगर सरकार ने मराठा आरक्षण को लेकर कोई भी कदम उठाया जो उनके समुदाय के हितों के खिलाफ हो, तो उसका राजनीतिक मूल्यांकन मराठा वोटरों और समाज द्वारा किया जाएगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि महाराष्ट्र में मराठा समुदाय एक प्रभावशाली वोट बैंक के रूप में उभरा है। पिछले कुछ सालों में इस समुदाय ने विभिन्न आंदोलनों और प्रदर्शनों के माध्यम से अपनी मांगों को जोरशोर से पेश किया है। इस लिहाज से, मनोज जरांगे की

चेतावनी केवल एक व्यक्तिगत बयान नहीं है, बल्कि यह पूरे समुदाय की आवाज़ को दर्शाती है।

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि इस विवाद का असर आगामी चुनावों में दिखाई देगा। मराठा आरक्षण का मुद्दा न केवल समाजिक स्तर पर बल्कि राजनीतिक मंचों पर भी गूंज रहा है। कई राजनीतिक दल इस समुदाय की भावनाओं को समझने और उन्हें संतुष्ट करने के लिए रणनीति बना रहे हैं।

मनोज जरांगे ने यह भी कहा कि मराठा समाज की चेतावनी सिर्फ पंकजा मुंडे और धनंजय मुंडे तक ही सीमित नहीं है। यह संदेश सभी राजनीतिक नेताओं के लिए है कि अगर किसी भी स्थिति में मराठा समुदाय के हितों की अनदेखी की जाती है, तो इसका परिणाम उनकी राजनीति पर भारी पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि मराठा समुदाय शांतिपूर्वक आंदोलन करने के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन यदि जरूरत पड़ी, तो वह सख्त कदम भी उठा सकता है।

इस मुद्दे ने महाराष्ट्र के राजनीतिक माहौल को भी प्रभावित किया है। विभिन्न दलों के नेता मराठा आरक्षण के मुद्दे पर अपने बयान दे रहे हैं और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संवाद बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। विश्लेषकों का कहना है कि इस विवाद के हल के लिए सरकार को सीधे मराठा समुदाय से संवाद करना होगा और उनके हितों की रक्षा करने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे।

मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे का यह बयान महाराष्ट्र के राजनीतिक परिदृश्य में नए सिरे से चर्चा का विषय बन गया है। उनके शब्दों में चेतावनी और आक्रोश दोनों झलकते हैं। यह स्पष्ट करता है कि मराठा समुदाय अब केवल प्रतीकात्मक राजनीति को सहन नहीं करेगा और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय रहेगा।

इस विवाद के बीच, पंकजा मुंडे और धनंजय मुंडे को भी अपने बयान पर विचार करना होगा और समुदाय के साथ संवाद स्थापित करना होगा। राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि अगर सरकार और नेताओं ने समय पर कदम नहीं उठाए, तो यह मुद्दा आगामी चुनावों में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.